विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 3-06-2021

वर्ग- सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

सन्धि के नियम

संहितैकपदें नित्या धातपसर्गयोः। नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

एक पद में सन्धि नित्य होती है और धातु तथा उपसर्ग के योग में, समास में सन्धि अवश्य करनी चाहिये।

जैसे

1. एक पद में-भो+ अति = भवति । पौ + अक = पावक।

2. धातु और उपसर्ग के योग में-प्र + एजते = प्रेजते। सम् + हरते = संहरते।

3. समास में-पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः।

सन्धि के प्रकार

संस्कृत में संधि के तीन मुख्य प्रकार होते हैं।

स्वर (अच् सन्धि)

व्यंजन (हल् सन्धि)

विसर्ग

1. स्वर संधि

अच् सन्धि भी कहा है। स्वर वर्ण परस्पर मिलते हैं और उनके मिलने पर जो विकार उत्पन्न हो, कहते हैं।

जैसे-उपेन्द्रः, नदीश, तथैव।

स्वर सन्धि (अच् सन्धि) के भेद

सवर्ण दीर्घ सन्धि (स्वर संधि)

गुण संधि

वृद्धि संधि

यण् संधि

अयादि संधि

1. सवर्ण दीर्घ सन्धि (स्वर संधि)

यदि अक् अर्थात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, लृ के बाद उसी के समान स्वर (वर्ण) आवे तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाता है

नियम: जब "अ या आ" के बाद "अ या आ" आवे तो दोनों के स्थान पर 'आ' दीर्घ हो जाता है,

दीर्घ सन्धि के उदाहरण संस्कृत में

देत्य + अरि: = दैत्यारि: (अ + अ = आ)

तव + आदेश = तवादेश: (अ + आ = आ)